हूं जैसा कि महात्मा गांधी जी ने कहा था कि खादी पहनने से हमारे जो मजदूर हैं, उनको रोजी-रोटी मिलेगी। इसी प्रकार मैं भी अपने देशवासियों से इस सदन के माध्यम से अपील करना चाहती हूं कि वे खादी पहनें, तो बहुत ही अच्छा, लेकिन इसके साथ-साथ वे अपने देश का बना कपड़ा पहनें, फारेन का कपड़ा न पहनें। ऐसा अपना इरादा पक्का बना लें, तो सिक मिल होने की जो प्राब्लम है, वह दूर हो जाएगी।

पिछड़े हुए क्षेत्र के बारे में मैं यह कहना चाहती हूं कि वहां एक उद्योग बनाना चाहिए। गवर्नमेंट अंडर टेकिंग बनाया जाना चाहिए। जैसे मेरा क्षेत्र कच्छ है वहां एक सोडा एश प्लाण्ट बनाना चाहिए क्योंकि वहां नमक का उद्योग बहुत होता है। आज जब यहां प्रधान मंत्री जी मौजूद हैं, तो मैं उनके समक्ष यह अनुरोध करती हूं कि मेरे कच्छ क्षेत्र में एक सोडा ऐश का प्लाण्ट बनाया जाना चाहिए। इससे जो नमक का उद्योग सिक हो गया है, वह भी ठीक से चलने लगेगा और मेरे क्षेत्र में जो विशाल एरिया है और जो लोग दूर-दूर रहते हैं और जिनको रोजगार का साधन नहीं है, उनको भी रोजी-रोटी मिल जाएगी और वहां पर उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा।

रेलवे की सुविधा भी मेरे यहां बढ़ाई जानी चाहिए। परिवार नियोजन के बारे में मुझसे पहले बोलने वाले मेरे एक भाई श्री दिग्विजय सिंह झाला ने कहा था, मैंने भी पहले एक सुझाव दिया था कि हमारे समाज में जो पुत्र और पुत्री का विचार होता है, जैसे किसी के एक पुत्री होती है और दूसरी भी पुत्री हो जाए तो तीसरे बच्चे के लिए मां-बाप को लगता है कि वह पुत्र ही हो जाए, क्योंकि हमारे समाज में पुत्र ही कमाकर देता है तो जिसके एक या दो पुत्री हों उनको 10, 15 हजार के सेविंग सर्टिफिकेट दे देने चाहिएं ताकि जब वह बूढ़े हो जाएं तो उनको कुछ सहायता मिले। मैं एक सुझाव यह भी देती हूं कि जिसके एक पुत्री हो और वह परिवार निबोजन करे तो उसके लिए भी सरकार को कुछ न कुछ करना चाहिए।

3.30 म० प०

भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह 1 ए (आई० आर० एस०-1 ए) के प्रमोचन के बारे में वक्तव्य

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री राजीव गांधी): भारत का प्रथम स्वदेशी सुदूर संवेदन उपग्रह (आई० आर० एस०) 1ए० को सोवियत संघ के बैकोनूर अंतरिक्ष अड्डे से सफलतापूर्वक छोड़ा गया। अंतरिक्षयान सफलतापूर्वक कार्य कर रहा हैं। यह अंतरिक्षयान प्रत्येक 103.2 मिनट में ध्रुवीय कक्षा में पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहा है।

वोस्तोक प्रमोचक से पृथक होने के बाद उपग्रह के सौर पैनलों का स्वतः प्रस्तरण कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया गया। ये पैनल निर्धारित सीमाओं में तापमान को बनाये हुए हैं।

इस उपग्रह को बंगलौर स्थित मुख्य अंतरिक्षयान नियंत्रण केन्द्र से नियंत्रित किया जा रहा है। इस मिशन में लखनऊ और मारीशस स्थित इसरो के भू-केन्द्रों का भी उपयोग किया जा रहा है। इसके अलावा, मिशन के प्रारम्भिक चरणों में केनिया, संयुक्त राज्य अमरीका और संघीय जर्मन गणराज्य

[श्री राजीव गांधी]

में स्थित विदेशी अंतरिक्ष एजेन्सियों के भू-केन्द्र उपग्रह की प्रगति के मानीटरन में सहायता कर रहे हैं

भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह की सभी प्रणलियों और उप-प्रणालियों का डिजाइन और संविरचन स्वदेशी रूप में किया गया है। आई०आर० एस०—1ए०का भार 975 कि०ग्रा० हैं और इसमें स्टेट-ऑफ-दी-आर्ट कैमरे के दो सैट रखे गए हैं। एक कैमरा भारत के ऊपर से गुजरने के दौरान 148 कि०मी० की देशान्तरीय पट्टी पर 72 मीटर के विभेदन वाली प्रतिविम्बिकियां प्रदान करेगा। दूसरा कैमरा इसी क्षेत्र पर 36 मीटर के विभेदन वाली प्रतिबिम्बिकियां प्रदान करेगा। यहसुनिश्चित करने के लिये कि प्रतिदिन लगभग प्रात: 10.25 बजे सभी प्रतिबिम्बिकियां प्राप्त की जाएं, अंतरिक्षयान की कक्षा का लगातार समायोजन किया जाएगा।

आई० आर० एस०—1 ए० का सफल प्रसोचन सुदूर संवेदन कार्यक्रम में एक प्रमुख मील स्तम्भ है। संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत संघ, फ्रांस और जापान के बाद भारत अब विश्व का ऐसा पांचवां राष्ट्र बन गया है, जिन्होंने अंतरिक्ष से पृथ्वी के संसाधनों की सुदूर संवेदन क्षमता स्थापित की है।

मुझे विश्वास है कि यह सदन मेरे साथ अंतरिक्ष विभाग उन वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और सहायक स्टाफ की टीम को हार्दिक बधाई देगा, जिनके पिछले पांच वर्षों के समर्पित प्रयासों से देश को यह महान उपलब्धि प्राप्त हुई है।

3.34 म० प०

सामान्य बजट, 1988-89—सामान्य चर्चा

—[जारी]

[हिन्दी]

श्री मोहम्मद अयूब खां (झुन्झुनू) : जनाबे सदरे मौतरम, जम्हूरियत का जश्नो-जमाली अवामी हुकूमत के चेहरे का विखार, यह किसानों की खुशहाली पर डिपैंड करता है।

अध्यक्ष महोदय : आज तो आपने बाल कवि बैरागी जी को भी पीछे छोड़ दिया।

श्री मोहम्मद अयूब खां : मैं सबसे पहले अपने मौतरम प्राइम मिनिस्टर श्री राजीव गांधी को इसके लिए बधाई देता हूं, और बधाई देना अपना हक-बजानिब समझता हूं कि जो वायदा उन्होंने किया था हमारे अवाम से, उसको उन्होंने पूरा किया है और ऐसा पूरा किया है कि आज गरीब से गरीब इन्सान भी इस बजट को देखकर खुश हुआ है। साथ ही हमारे वित्त मंत्री जी भी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने खुश अस्लोबी से इसको सरंजाम दिया है। यह बजट गरीबों और मजदूरों का बजट हैं। इसके बावजूद ऐसा बजट पेश होने पर भी हमारे विरोध पक्ष के साथी जो कि यहां पर उपस्थित होने चाहियें, देखने को नहीं मिल रहे हैं। इनको अपने मुल्क से, अपने अवाम से और अपने वोटरों से कोई लगाव नहीं लगता है। यही इनमें और हमारे में फर्क है। इस बजट के अन्दर जो कुटीर ज्योति और जलधारा नामक नई योजनायें लायी गई हैं, इनके बारे में मैं आपसे यह कहना चाहूंगा कि इनको आप बहुत सख्ती के साथ अमल करायें। ऐसा करने पर ही हमें कायाबी मिलेगी। इसके अलावा उन चीजों पर भी गौर करना होगा जिन चीजों के ऊपर हम आज तक ध्यान नहीं दे सके हैं।

अब मैं राजस्थान की तरफ आता हूं। राजस्थान के 27 जिलों में से 26 जिले भीषण अकाल की चपेट में हैं। 211 तहसीलों में से 208 तहसीलें अकाल की चपेट में हैं में से 36,200 गांव इस